SALTOC Project
Title: Madhumatī
Imprint: Udayapura: Rājasthāna Sāhitya Akādamī
OCLC: 3195624
Volume 43: no 3, March 2003

TOC Supplied By: Columbia University Libraries

मधुमती

मार्च,
2003

राजस्थान साहित्य अकादमी

विगतवार

अनहदनाद

वेद व्यास 6

प्रस्तावना

जवाहरलाल नेहरू 9

अवदान

क्या हार में, क्या जीत में/ *नंद चतुर्वेदी* 15

गीत-ग़ज़ल

कन्हैयालाल सेठिया 19

दया कृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' 20

डॉ. जबरनाथ पुरोहित 21

डॉ. सावित्री डागा 22

डॉ. शंभुनाथ तिवारी 23

भगवतशरण चतुर्वेदी 24

चन्द्र कुमार 'सुकुमार' 25

शम्मी 'शम्स' 26

वैद्य पुरूषोत्तमदत्त 'प्रमत्त' 27

अनेकांत

हमारी सांस्कृतिक चुनौतियाँ 29

डॉ. सुधा चौधरी

साहित्य के सामने विकल्पहीन स्थिति 35

राजेन्द्र शंकर भट्ट

जन आन्दोलन का साहित्य 41

डॉ. राम पाण्डे

कविताएं

जीवन महता 45

मदनमोहन परिहार 47

महेन्द्र 'नेह' 48

नरेन्द्र निर्मल 50

कमलेश कटारिया 52

पुनर्रचना

आखरी दिन (इतालवी कहानी)/ग्योदानी पायिन्नी 54

अनु. : हबीब कैफी

वृद्ध हुए हैं मेरी प्यारी !/अल्फ्रेड टेनीसन 57

अनु. : डॉ. मनोहर प्रभाकर

कहानियाँ

पीढ़ियों का दर्द 59
सुदर्शन पानीपती

दहकते बुरूंस और मैं 63
प्रफुल्ल प्रभाकर

पेंशन 70
राधेश्याम

आकाश का बादशाह 76
सुमन मेहरोत्रा

विमर्श

सर्जनात्मक अनुभव के अन्तःकरण तक पहुँचना 82
डा. नामवर सिंह से डा. महावीर अग्रवाल की बातचीत

व्यंग्य

महिमा चमचागिरी की 94
योगेश चन्द्र शर्मा

समान नागरिक आचार संहिता लागू हो तो.... 97
कृष्ण कुमार 'आशु'

स्वामी जी डॉट कॉम 99
रामविलास जांगिड़

मेंढ़क की टर्र टर्र 102
डॉ. यश गोयल

परख

शलभ के गीत/ *कवि घनश्याम 'शलभ'* 105

पीठ के दाग/ *डिम्पल बोरीचा 'सहर'* 106

अज्ञेयः नई दृष्टि/रेखा गुप्ता 108

सरोकार 109

बड़ी चौपड़ 114

खिड़की (मार्च के महीने में)/ *हिमांशु पंड्या* 117

रचनाकार 120

भीतरी आवरण/सौ. मीरां कला मन्दिर/डॉ. बी.जी. शर्मा

''अंग्रेज की जड़ें हिल चुकी हैं। वे पंद्रह साल में चले जाएंगे, समझौता हो जाएगा, पर इससे जनता को कोई लाभ नहीं होगा। काफ़ी साल अफरा-तफ़री में बीतेंगे। उसके बाद लोगों को मेरी याद आएगी...''

इस अंक के समस्त उद्धरण 'भगत सिंह के दस्तावेज' पुस्तक से लिए गए हैं।